शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वैश्विक क्षितिज पर हिन्दी

डॉ० राजेश तिवारी 'विरल'
असि. प्रोफे., हिन्दी विभाग, डी०ए-वी०, कॉलेज, कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

हिन्दी मुक्तक की परंपरा में गीत के बाद हिन्दी गजल विधा को प्रतिष्ठित करने की रचनात्मक कोशिश

- डॉ० राजेश तिवारी 'विरल'

समीक्ष्य पुस्तक : धूप आती ही नहीं
लेखक : बृजभूषण सिंह गौतम 'अनुराग'
प्रकाशक : पार्थ प्रकाशन,
एम.एम.आई.जी., बी-२३, निकट
स्पोर्ट्स स्टेडियम,
रामगंगा विहार-१, काँठ रोड, मुरादाबाद-२४४ ००१
पृष्ठ : 102
मूल्य : 100/-
ISBN: 978-81-89092-26-9

गीति-काव्य विधा संगीत के साथ गया जाने वाला, आत्माभिव्यंजना तथा जीवन को नव उल्लास प्रदान करने का मुक्तक माध्यम है, इसी कड़ी में गज़ल उस उल्लास में चपला की भाँति कौंध उत्पन्न करने वाली वह शक्ति है जो अनायास ही मन को झंकृत कर देती है। गीत में मुक्तक तत्व होते हुए भी उसके अन्त होने तक उसे समझने हेतु प्रतीक्षा रहती है किन्तु गज़ल में आत्मसात् करने की तात्कालिक प्रवृत्ति गीत से अधिक तीव्रतर होती है। जब कोई सिद्ध गीतकार गज़लकार के रूप में समाज में प्रस्तुत होता है तो उसके गीतों का परिमार्जन उसकी गज़लो में स्वत: प्रतिफलित होता दीखता है। गीत से गज़ल की काव्ययात्रा श्री बृजभूषण सिंह गौतम 'अनुराग' ने जिस तल्लीनता से पूर्ण किया है उससे सिद्ध होता है कि नागार्जुन की ''दुर्गम बर्फानी घाटी के, शत सहस्त्र फिट ऊँचाई पर'' चढ़ने का उद्दाम पौरुष कवि 'अनुराग' जी अपनी गज़लों में लेकर बढ़े हैं। 'अनुराग जी' का प्रथम गज़ल संग्रह 'धूप आती ही नहीं' उनके गीत संग्रहों के बाद का संकलन है। अस्तु उनकी गज़लों में गीतों की भाव वेदना घनीभूत होकर स्फुर्लिंग की भाँति चमकती है। संग्रह की भूमिका में स्वयं कवि अनुराग अपनी गज़लों के माध्यम से काव्य-संवेदना के विविध पक्षों के साथ-साथ राष्ट्र एवं समाज-संवेदना के प्रति अपने काव्य-धर्म का संकेत करते दिखायी देते हैं। संगीत, व्याकरण, भाषा को योजना का अंग न बना कर लिखा गया उनका यह गज़ल संग्रह, उनकी इस सम्बन्ध में ईमानदार स्वीकारोक्ति उन्हें 'मोहि तो मोर कवित्व बनावत' के रचनाकार घनानन्द की विचारधारा का कवि बनाती है। मुक्तक और प्रबन्ध रचना में पर्याप्त और मुख्य भेद यह है कि प्रबन्ध में कथा का निर्वाह आदि से अन्त तक रहता है। किन्तु मुक्तक में रहीम की 'नटकुंडली' में सिमटने या बिहारी के 'गम्भीर घावों' की अभिव्यक्ति जैसा इन्द्रजाल समाहित रहता है। 'अनुराग' जी का गज़ल संग्रह इन्हीं अतिलघु भावाभिव्यक्तियों के माध्यम से गज़ल क्षेत्र में अपनी अभ्युदय की इतिहास गाथा लिख रहा है। कवि नैराश्य में भी आशा के संचरण की कामना अपनी पहली रचना - 'गुलिस्ताँ बनाने को जी चहता हैं। से करता है। कवि जहाँ एक ओर बैर भाव भूलकर प्यार की महफिल में आने का आमन्त्रण देता है वहीं प्रिय के आगमन पर 'रात भर चाँदनी के थिरकने' के माध्यम से

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वैश्विक क्षितिज पर हिन्दी

डॉ० राजेश तिवारी 'विरल'
असि. प्रोफे., हिन्दी विभाग, डी०ए-वी०, कॉलेज, कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

अपने उल्लास का इजहार करता है। कवि अनुराग की गज़लों में जीवन 'पीर का आचमन' बनता है और वही पीर प्रिय के प्रति 'मर मिटने' को तैयार है। उन्होंने अपनी गज़लों में आतंक से डरे गाँव दिखायें हैं, उनकी गज़लों में गरीबी का जीवन्त चित्रण भी मिलता है। गौतम जी एक संवेदनशील कवि की भाँति 'देश को आगे बढ़ाने' की सोचते हैं। अन्याय, भय, भ्रष्टाचार, चोरी, नैराश्य के वातावरण का चित्रण उनकी गज़लों में यत्र-तत्र-सर्वत्र मिलता है। जीवन की नश्वरता का भान कवि अनुराग को भलीभाँति है – ''मौत आनी है आकर रहेगी। मौत आई हुई कब टली है'' के बाद भी वे मौत को जिन्दगी से भी सस्ती मानकर अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार हैं, उन्हीं के शब्दों में –

इक अदा की उसने कीमत मुझसे माँगी जिस घड़ी।
जिन्दगी की बात क्या है मौत भी सस्ती लगी।।

इस प्रकार भी ब्रजभूषण सिंह गौतम 'अनुराग' का गज़ल संग्रह 'धूप आती ही नहीं वास्तव में 'धूप आती ही रही' है। मेरे विचार से उनकी गज़लों पर मेरी गज़ल –

तुम जलाकर दीप गज़लों की बनाते श्रृंखला।
एक लड़ भी अब तुम्हारी रोशनी भर जाएगी।।
'धूप आती ही नहीं' तो क्या हुआ 'अनुराग' है।
काव्य-ब्रजभूषण तुम्हारा पुंजमय कर जाएगी।।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN